Topic 72 हलन्त सर्वनाम शब्द युष्मद्, अस्मद् आदि — ।

तदोः सः सावनन्त्ययोः ।
त्यदादीनां तकारदकारयोरनन्त्ययोः सः स्यात् सौ ।
स्यः, त्यौ, त्ये । सः, तौ, ते । यः, यौ, ये । एषः, एतौ, एते, एतम् । अन्वादेशे - एनम्, एनौ, एनान्, एनेन, एनयोः ।

'सु' परे होने पर त्यदादियों के अनन्त्य तकार और दकार के स्थान पर सकार आदेश होता है।
उदाहरण के लिए 'त्य + स्' में 'सु' परे होने के कारण 'त्यद्' शब्द के अनन्त्य तकार को सकार होकर स्य+स् रूप बनेगा। सकार को रुत्व और रेफ को विसर्ग करने पर स्यः रूप सिद्ध होता है।

ङे प्रथमयोरम् ।
युष्मदस्मद्भ्यां परस्य 'ङे' इत्येतस्य प्रथमाद्वितीययोश्चामादेशः स्यात् ।

त्वाहौ सौ ।
अनयोर्मपर्यन्तस्य त्वाहौ आदेशौ स्तः ।
'सु' परे होने पर म् तक युष्मद् और अस्मद् के स्थान पर 'त्व' और 'अह' आदेश होते हैं। अनेकाल् शित् सर्वस्य परिभाषा द्वारा अनेकाल् होने के कारण ये आदेश सम्पूर्ण स्थानी के स्थान पर होंगे।

शेषे लोपः ।
एतयोष्टिलोपः । त्वम् । अहम् ।
जहाँ आकार या यकार का विधान न हुआ हो, ~~ही युष्मदस्मदोः से युष्मदस्मदोः को~~ वहाँ युष्मद् और अस्मद् का लोप होता है। काशिकार के अनुसार यह लोप [illegible]

युवावौ द्विवचने ।

द्वयोरुक्तावनयोर्मपर्यन्तस्य युवावौ स्तो विभक्तौ ।

प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् ।

औङ्येतयोरात्वं लोके । युवाम् । आवाम् ।

लौकिक संस्कृत भाषा में प्रथमा विभक्ति का द्विवचन परे होने पर युष्मद् और अस्मद् के स्थान पर आकार आदेश होता है 'अलोऽन्त्यस्य' परिभाषा से यह आदेश अन्त्य अल्-दकार के स्थान पर ही होता है। उदाहरण के लिए 'युव अद् + अम्' और 'आव अद् + अम्' में प्रकृत सूत्र से दकार के स्थान पर आकार आदेश करने पर 'युव अ आ + अम्' और 'आव अ आ + अम्' रूप बनेंगे। इस अवस्था में पररूप, सवर्णदीर्घ तथा पूर्वरूप करने पर 'युवाम्' और 'आवाम्' रूप सिद्ध होंगे।

यूयवयौ जसि ।

अनयोर्मपर्यन्तस्य । यूयम् । वयम् ।

जस् परे होने पर युष्मद् और अस्मद् शब्दों के मपर्यन्त भाग - युष्म् और अस्म् के स्थान पर क्रमशः 'यूय' और 'वय' आदेश होते हैं। 'अनेकाल' होने के कारण ये आदेश 'अनेकाल्शित्सर्वस्य' परिभाषा से सम्पूर्ण 'युष्म्' और 'अस्म्' के स्थान पर होंगे। उदाहरण के लिए 'युष्मद् + अम्' और 'अस्मद् + अम्' में अम् को जस मान कर उसके परे होने पर मपर्यन्त को क्रमशः 'यूय' और 'वय' आदेश करने से 'यूय अद् + अम्' तथा 'वय अद् + अम्' रूप बनेंगे।